Chapter 2

bihar board 9th class economics notes – मानव एक संसाधन

मानव एक संसाधन

इकाई की मुख्य बातें-मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जिसकी न्यूनतम आवश्यकता रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य एवं शिक्षा है। इसलिए मानव को एक संसाधन के रूप में जाना जाता है।

मानव एक संसाधन के रूप में

जब व्यक्ति राष्ट्रीय उत्पादक के सृजन में अपना योगदान देने लगते हैं तो वह एक संसाधन के रूप में जाने जाते हैं। अर्थात् जब किसी भी व्यक्ति में शिक्षा, स्वास्थ्य और प्रशिक्षण के रूप में निवेश किया जाता है तो वह राष्ट्र की संपत्ति बन जाता है। इससे राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि होती है।

भौतिक एवं मानवीय पूँजी

पूँजी के दो रूप होते हैं-भौतिक पूँजी तथा मानवीय पूँजी। उत्पादन बढ़ाने के लिए जब मशीन, औजार, उपकरण, फैक्टरी की इमारत, कच्चे माल इत्यादि का उपयोग करता है तो वह भोतिक पूँजी कहलाता है परंतु जब श्रम, कौशल के द्वारा मनुष्य का उपयोग किया जाता है तो वह मानव पूँजी कहलाता है।

मानवीय पूँजी-निर्माण अथवा मानवीय साधनों का विकास

मानव का संसाधन के रूप में विकास शिक्षा, भोजन, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, प्रशिक्षण, सूचना, तकनीक प्रबंधन के द्वारा होता है जिनका विवरण निम्न हैं-

(i) भोजन-मानव को जीवित एवं स्वस्थ रहने के लिए भोजन देना आवश्यक होता है। क्योंकि इसके बिना मानव शारीरिक एवं मानसिक क्रिया नहीं कर सकता है। अत: भोजन मानव संसाधन की एक प्रमुख आवश्यकता है।

(i) वस्त्र-जब मनुष्य को भोजन की आपूर्ति हो जाती है तो शरीर को ढकने के लिए वस्त्र की जरूरत पड़ती है जिससे वह मौसम की मार से बच जाता है।

(iii) आवास-मानव की तीसरी अनिवार्य माँग सर छिपाने के लिए आवास अर्थात् घर है जिसमें मनुष्य अपने-आप को प्रत्येक मौसम में सुरक्षित रख पाता है।

(iv) स्वास्थ्य-मानव का अच्छा स्वास्थ्य ही उसकी सबसे महत्त्वपूर्ण पूँजी है और इसमें खर्च कर बढ़ोतरी करना मानव को एक महत्त्वपूर्ण संसाधन के रूप में परिवर्तित कर देता है। स्वास्थ्य पर व्यय मानव-पूँजी के निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

(v) शिक्षा-शिक्षा के द्वारा मानव मानवीय पूँजी के रूप में समृद्धि पाते हैं। इसलिए व्यक्ति अपने और देश के विकास को बढ़ाने के लिए शिक्षा पर व्यय करता है। इससे व्यक्ति की क्षमता बढ़ती है जिससे उत्पादन में बढ़ोतरी होती है।

(vi) प्रशिक्षण-शिक्षा के द्वारा प्राप्त श्रम को कौशलता के साथ जोड़ने के लिए विशेष श्रम की आवश्यकता होती है जो हमें प्रशिक्षण से प्राप्त होता है। इस प्रकार प्रशिक्षण के द्वारा कौशलता में वृद्धि होती है तथा उत्पादन में इजाफा होता है।

(vii) सूचना तकनीक-सूचना तकनीक मानव संसाधन को समृद्ध करने की पूँजी है। इसके आधार पर मनुष्य अपने-आप को ज्ञान के क्षेत्र में वृद्धि करता है तथा उसके तकनीक के द्वारा उत्पादन में वृद्धि करता है।

https://www.evidyarthi.in/

(viii) प्रबंधन-शिक्षा के स्तर से प्रबंधन के स्तर को ऊँचा उठाया जा सकता है। क्योंकि इसके माध्यम से ही समस्त साधनों को एक जगह अच्छे ढंग से प्रयोग करते हैं तो कुशल संगठन का परिचयात्मक बोध होता है जिससे उत्पादन दिन दुनी रात चौगुनी रफ्तार से बढ़ता है।

जनसंख्या

जनसंख्या का अभिप्राय मनुष्य की आबादी से है। यह राष्ट्र के लिए अमूल्य पूँजी है जो वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन, वितरण और उपभोग करती है अर्थात देश के आर्थिक विकास में सहयोग करती है। इसलिए जनसंख्या को साधन और साध्य दोनों माना जाता है। भारत में
जनगणना प्रत्येक 10 वर्षों पर की जाती है। आजादी के समय भारत की जनसंख्या 33 करोड़ थी जो 2001 में 102.70 करोड़ हो गई है।

बिहार : जनसंख्या और उसके विभिन्न अवयव

2001 के जनगणना के अनुसार बिहार की जनसंख्या 8, 28, 78, 796 (8.28 करोड़) जो भारत की कुल जनसंख्या का 8.07 प्रतिशत है। इस प्रकार जनसंख्या की दृष्टि से उत्तर प्रदेश तथा महाराष्ट्र के बाद बिहार तीसरा बड़ा राज्य है।

बिहार में जनसंख्या वृद्धि दर

वर्ष 1991-2001 की अवधि में बिहार की जनसंख्या वृद्धि दर 28.43 प्रतिशत है जो भारत की जनसंख्या वृद्धि दर 21.34 प्रतिशत से अधिक है। इस दशक में राज्य के 22 जिलों की जनसंख्या वृद्धि दर बिहार की औसत जनसंख्या वृद्धि दर 28.43% से अधिक रही है। इनमें सबसे प्रथम शिवहर-36.16% तथा सबसे कम नालंदा-18.64% थी।

बिहार में जनसंख्या घनत्व

जनसंख्या घनत्व से तात्पर्य प्रतिवर्ग किलोमीटर क्षेत्र में निवास करने वाले व्यक्तियों की संख्या से है। 2001 के जनगणना के अनुसार बिहार की जनसंख्या घनत्व 880 प्रतिवर्ग किलोमीटर है जो 1991 में 685 वर्ग किलोमीटर प्रतिवर्ग थी।

बिहार में लिंगानुपात (स्त्री-पुरुष अनुपात)

लिंगानुपात या स्त्री-पुरुष अनुपात से तात्पर्य प्रति हजार पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या से है। 2001 की जनगणना के अनुसार बिहार में लिंगानुपात 921 थी जबकि 1991 में यह 907 थी।

बिहार की साक्षरता

यदि कोई व्यक्ति किसी भाषा को समझने के साथ-साथ उस भाषा को लिखना-पढ़ना भी जानता हो तो उसे साक्षर कहते हैं तथा इस स्थिति को साक्षरता कहते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार बिहार में कुल साक्षरों की संख्या 31675607 है जिसमें पुरुष 200978955 है तथा महिला 10696652 है। 2001 में बिहार में साक्षरता दर 47.53% है जबकि 1991 में यह 37.49 प्रतिशत
थी। यह राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। भारत की साक्षरता दर 65.38% है।

बिहार में ग्रामीण और शहरी जनसंख्या

जिस राज्य का शहरीकरण जितना अधिक होगा वह राज्य विकास के क्षेत्र में उतना ही अग्रणी होगा। बिहार में जिन जिलों का शहरीकरण हुआ है उनमें पटना, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, छपरा, गया, वैशाली प्रमुख हैं। वर्तमान में बिहार में ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या का अनुपात
89 : 11 (2001 की जनगणना के अनुसार) है। बिहार में अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारणों में गर्म जलवायु,

https://www.evidyarthi.in/

संयुक्त परिवार प्रथा, बाल-विवाह, अशिक्षा, गरीबी, परंपरागत मान्यताएँ आदि प्रमुख हैं। इन्हें नियंत्रित करने हेतु निम्न उपाय किए जा सकते हैं-तीव्र आर्थिक विकास, परिवार नियोजन, आत्मसंयम, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, जागरूकता आदि है।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2005

जनसंख्या को नियंत्रित करने के उद्देश्य से 15 फरवरी, 2000 को भारत सरकार के द्वारा 'राष्ट्रीय जनसंख्या नीति' की घोषणा की गई। इसके तहत तीन प्रकार के उद्देश्य निर्धारित की गई है-तत्कालीन, मध्यकालीन तथा दीर्घकालीन। तत्कालीन उद्देश्य के तहत गर्भनिरोध की आपूर्ति, तत्कालीन जरूरतों को पूरा करना, मूलभूत पुनर्जन्म एवं शिशु स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने के लिए
स्वास्थ्य संरचना, स्वास्थ्य सेवकों तथा समन्वित वितरण प्रणाली की व्यवस्था करना मुख्य उद्देश्य है। मध्यकालीन उद्देश्य के अंतर्गत कुल प्रजनन दर को 2010 तक प्रतिस्थापन स्तर पर लाना है तथा दीर्घकालीन उद्देश्य 2045 तक जनसंख्या को उस स्तर स्थिर बनाना है। दीर्घकालीन विकास की जरूरतों, सामाजिक विकास तथा पर्यावरण सुरक्षा के अनुरूप माना गया है।

https://www.evidyarthi.in/